तूफ़ान

शार्लेट ज़ोलोटोव

उस दिन गांव में कुछ ज़्यादा ही गर्मी थी. घास सूखी और पकी दिख रही थी. बटरकप के फूल धूल से चिपचिपे हो गए थे; डेज़ी की सफेद पखुड़ियां सिलेटी पड़ गई थीं. और गेट के ऊपर चढ़ी गुलाब और होलीहॉक फूलों की बेलें गर्मी से झुलस गई थीं और उनके तने एकदम लटक गए थे.

छोटा लड़का तपती हुई गर्मी को धरती से धुंध की तरह ऊपर उठते हुए देख सकता था. छोटा सा एक कैटरपिलर सावधानी से एक धूल से सनी घास पर चढ़ता था और फिर उतरता था. हर जगह एक विशेष प्रकार की गर्म शांति थी. एक सफेद कुत्ता बरामदे की जाली के नीचे छाया में सोया था. यहां तक कि गर्मी के कारण पक्षी भी गाने में असमर्थ थे. इसलिए पेड़ों की पत्तियों के बीच कोई कलरव नहीं था.

फिर धुंधला आकाश धीरे-धीरे बदलने लगा और पीली गर्मी, सिलेटी रंग की हो गई. अब चारों ओर सिर्फ एक ही सिलेटी रंग दिखाई दे रहा था. पक्षियों की चहचहाहट बंद हो गई थी. कोई भी शाख, कोई भी पत्ता थोड़ा भी नहीं हिल रहा था.
पर ऐसा लगता था जैसे बढ़ते अंधेरे से कुछ अपेक्षित हो; उससे कुछ उम्मीद हो, और छोटा लड़का उसका इंतजार कर रहा था.

वो इंतजार करता रहा और फिर कुछ देर बाद काले बादल बनना शुरू हो गए. बादल अपनी परछाई सूखे खेतों पर फेंकने लगे. धीरे-धीरे पूरे आकाश में काले बादल छा गए और आकाश रात जैसा काला-सियाह हो गया. फिर एक ठंडी हवा का झोंका अचानक पेड़ों के बीच से गुजरा, और उसने गुलाबों की बेल को हिलाया. उसने अन्य फूलों - डेज़ी और बटरकप्स और लंबी घास को भी हिलाया और फिर खुद पहाड़ी के नीचे बह गया.

फिर तूफ़ान आया! आकाश में बिजली की एक लकीर, एक फ़्लैश और चिंगारी जैसे तेज़ी से फैली. यह सब कुछ इतनी तेज़ी से हुआ कि छोटे लड़के को तूफान की हवा में फूलों को झूलते देखने का मौका ही नहीं मिला.
"ओह, माँ!“ उसने पूछा, "वो क्या था?“

"बिजली!" माँ ने जवाब दिया, "यह वही बिजली है जिससे हमारा लैम्प पोस्ट जलता है." छोटा लड़का अपने कमरे में लैम्प पोस्ट के होने की कल्पना करता रहा. वो उसकी गर्म सुनहरी चमक के बारे में सोचता रहा. फिर उसने आकाश में कड़कती बिजली के बारे में सोचा. वो बिजली, जंगल में मुक्त सफेद जंगली भेड़िये की तरह थी - और लैंप छोटे सफेद कुत्ते की तरह था जो लड़के के बुलाने पर तुरंत उसके पास आता था.

फिर पहाड़ी के बहुत दूर से बादलों की तेज़ गड़गड़ाहट की आवाज़ आई.

"वो क्या है?" छोटा लड़का चिल्लाया.

"बारिश के बादल जब एक-दूसरे से टकराते हैं, तो उनसे इसी तरह की आवाज़ें निकलती हैं." माँ ने कहा.

अब दुबारा से अंधेरी दुनिया में एक सन्नाटा छा गया. आकाश में चकाचौंध बिजली चमकने लगी.

जैसे-जैसे गर्जन पास आई वैसे-वैसे आसमान में फिर अंधेरा छा गया. फिर अचानक एक विस्फोट के साथ, तेज़ बारिश की चांदी जैसी धार नीचे बरसने लगी. बारिश की तेज़ मार से डेज़ी और गुलाब की बेलें जमीन पर झुककर लेट गईं. तूफान के विशाल हाथ, पौधों को झूला झुलाने लगे.

तूफान और अंधेरे वाले शहर से मीलों दूर, एक युवक अपनी किताब बंद करके खिड़की से बाहर देखने के लिए उठा. उसके नीचे सड़क पर, दुकान की रोशनी, खिड़कियों से होकर गीली फुटपाथ पर चमकती हुई देखी. अब बिजली की हर चमक देखकर लोग दौड़ने लगे.

वे अपने सिरों को छतरियों और अखबारों से ढंकने लगे. बारिश और हवा से बचने के लिए लोगों ने तमाम अटकलें लगाईं.

काले बादलों से ऊंची इमारतों की चोटियां अंधेरे में ढंक गईं. और छोटे शहर के पेड़ों को अपनी जड़ों से उखड़ने का डर लगने लगा. तेज़ हवा ने पेड़ों की शाखों और पत्तियों को तोड़ा. मोटर गाड़ियों के टायरों ने गुजरते समय तेज आवाज की.

समुद्र के किनारे एक बूढ़ा मछुआरा लहरों में घुटनों तक पानी में खड़ा था. उसने बड़ी मुश्किल से हवा के थपेड़े और बारिश के छींटे रोकने की कोशिश की. उसका चेहरा समुद्री बौछार और बारिश से गीला हो गया. जब बादलों की गड़गड़ाहट हुई, तो कुछ और सुनाई नहीं दिया - न काली लहरों की आवाज़, और न ही बारिश की बौछार. ऐसा लगा जैसे दुनिया में सिवाए बादलों की गर्जन के और तेज़ चमकती बिजली के और कुछ भी न हो.

एक बार जब बिजली चमकी तो एक छोटा भूरे रंग के सैंडपाइपर रेत पर तेज़ी से फिसला और बिजली की तेज़ी से अपने घर में गायब हो गया.
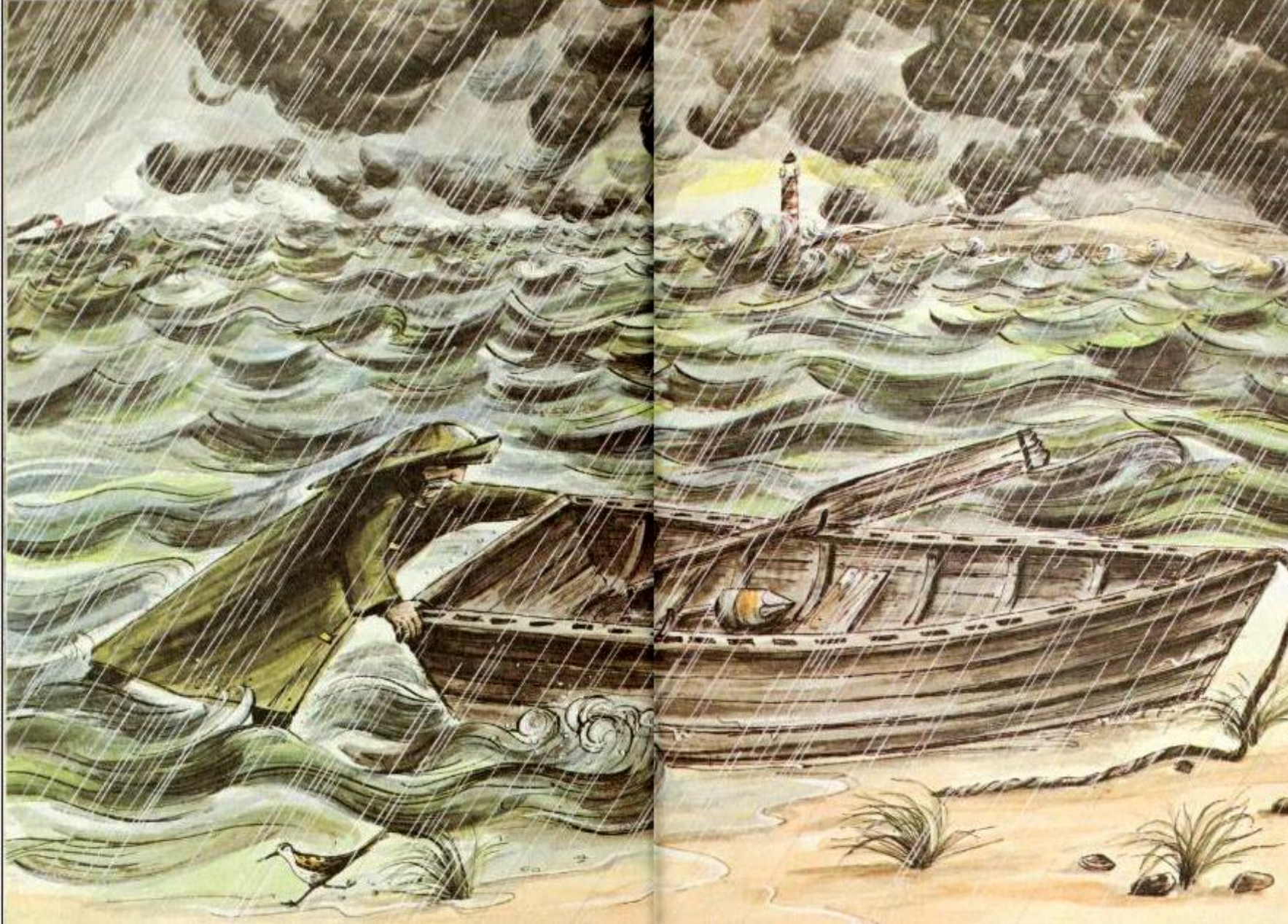
पहाड़ों में बारिश एक झरने की तरह नीचे आई. गड़गड़ाहट की आवाज किसी दुर्घटना जैसे आई - जैसे पहाड़ों की चट्टानें टूट रही हों. लेकिन बिजली के प्रत्येक फ़्लैश में पहाड़ों की चट्टानें ठोस और शांत दिखाई दीं.

एक युवा चरवाहे ने अपनी भेड़ों को आश्रय दिया. उसकी पत्नी खिड़की से बाहर तूफान और फटी पहाड़ियों को देखती रही, जबकि बच्चा चुपचाप उसकी बाँहों में सोता रहा.
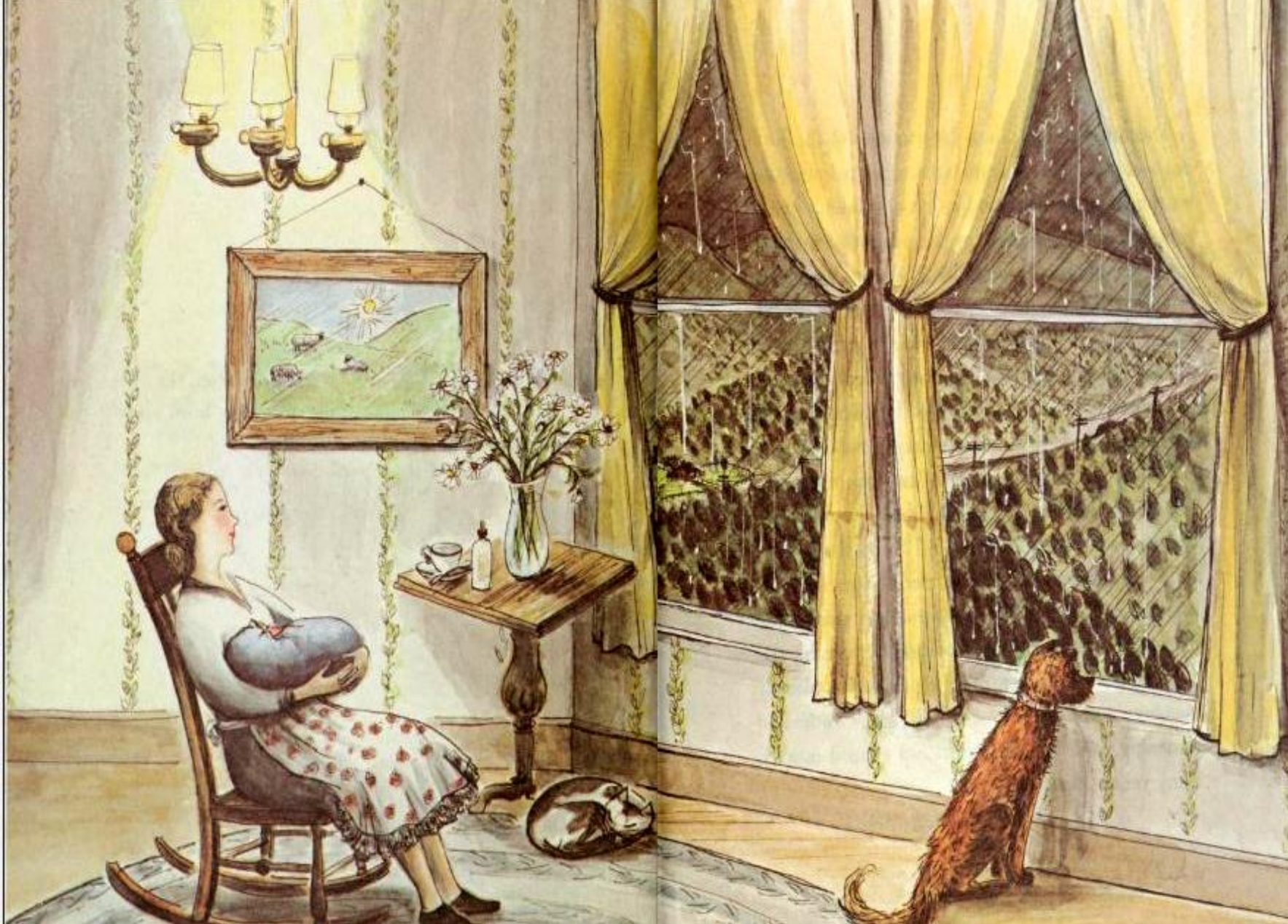
बारिश की बौछारें छोटे लड़के के घर की खिड़कियों पर वार करती रहीं. बारिश की बूँदें जोरदार तरीके से छत को मारती-पीटती रहीं, और पेड़ों में उठती-गिरती हवा, समुद्री लहरों के टूटने की आवाज़ करती रहीं.

धीरे-धीरे तूफान थमा. आकाश चमकने लगा, गड़गड़ाहट बंद हो गई. अब छोटे लड़के को सिर्फ दूर की ही गर्जन सुनाई दे रही थी, क्योंकि ठंडी गीली ज़मीन ने बादलों को दूर उड़ा दिया था. छत पर जोर से पिटपिट की आवाज़ धीरे-धीरे धीमी हुई, और अंत में सुस्त होकर पूरी तरह से बंद हो गई. हवा साफ और ताज़ी थी, और उसमें से गीली मिट्टी की सोंधी खुशबू आ रही थी.

हवा और तेज़ बारिश की बौछार से गुलाबों की मीठी-मीठी पंखुड़ियों से मैदान ढँक गया. डेज़ी के फूल अभी भी बारिश के वजन से झुके हुए थे, और उनकी नम सफेद पंखुड़ियां एक साथ चिपकी हुई थीं. लेकिन बटरकप अब पहले से ज़्यादा सीधे, ताज़े और चमकदार दिखाई दे रहे थे. हरेक चमकदार पीले फूल में एक बारिश की बूँद छिपी थी.

एक अजीब पीली रोशनी अब पृथ्वी पर फैली थी. रोशनी इतनी बेहोश, इतनी सुंदर थी कि छोटे लड़के ने एक हल्की सीटी की आवाज के साथ अपनी सांस बाहर छोड़ी. फिर अचानक सारे पक्षी अपने-अपने गीत गाने लगे. अब चमकते हुए गीले पेड़ों पर चिड़ियों का कलरव सुना जा सकता था.

यहाँ-वहाँ चमकती हुई घास में एक तेज़, भूरी गौरैया, कीड़ों की तलाश में घूम रही थी. अब प्रकाश सब तरफ फैला था - घरों, फूलों, घास के मैदान, पेड़ों, और छोटे लड़के के शांत चेहरे पर भी.

"वो क्या है!" लड़के ने अचानक अपनी माँ से पूछा. माँ दरवाजे पर आई और उसने पीले प्रकाश में एक रंगीन घुमावदार इंद्रधनुष की मेहराब को देखा. इंद्रधनुष कितनी दूर है इसका उन्हें कोई अंदाज़ नहीं था.
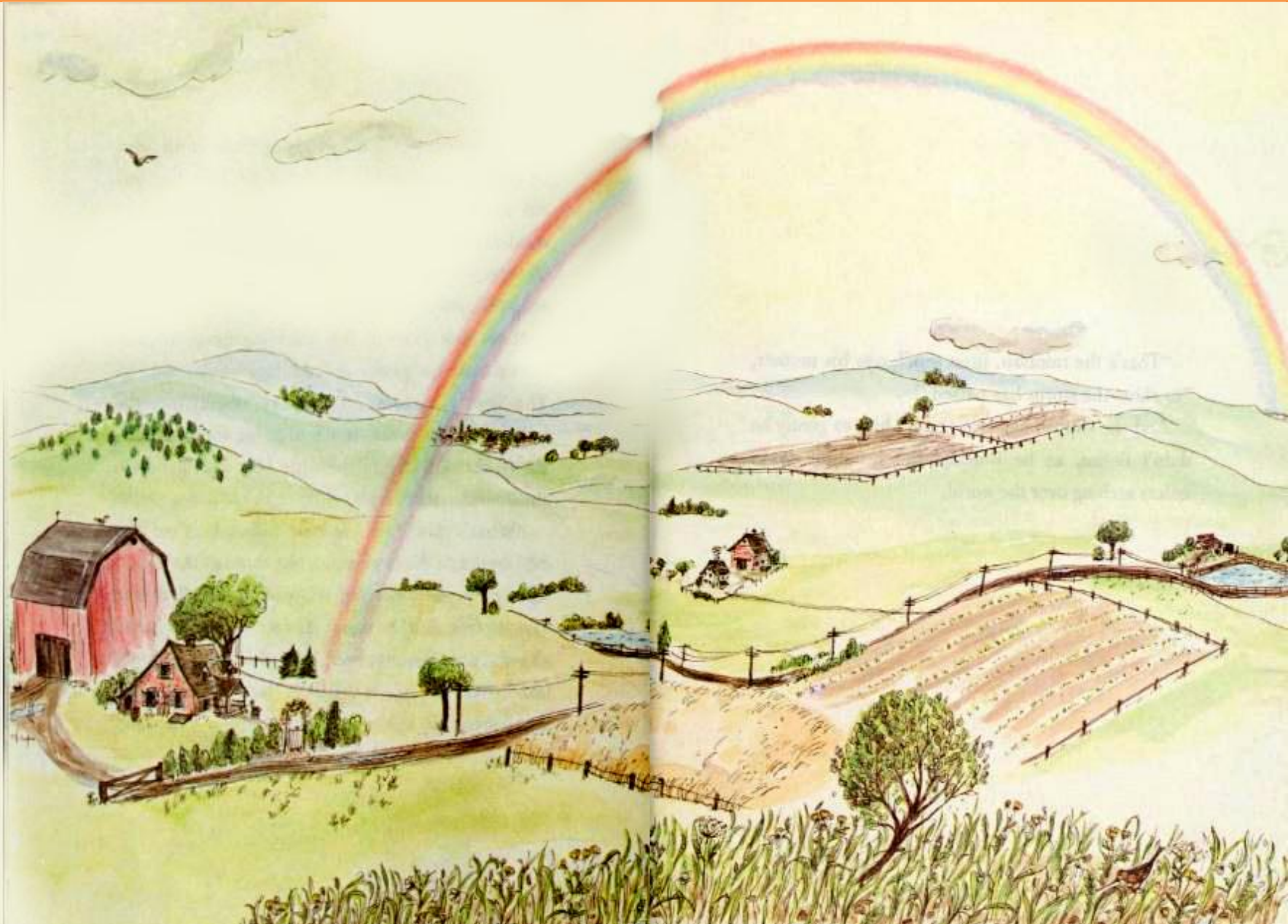
"वो इंद्रधनुष है, बेटा," माँ ने कहा," इंद्रधनुष हमें बताता है कि तूफ़ान अब ख़त्म हो चुका है."

फिर माँ ने बेटे के कंधे पर हल्के से अपना हाथ रखा. लड़के ने उसका कोई ध्यान ही नहीं दिया, क्योंकि वह दुनिया के सबसे सुंदर रंगों के छिपा-छिली देख रहा था.

अंत